नवल रुप बिखरा धरा पर

खुले पंखों ने मोर बसेरा

नए फूल गुचे अब तितली

गंगा में स्वछता का डेरा ।

राजा को रंक बनाए

दुबक के घर में बैठा

प्रकृति से खेलता था जो

लॉकडाउन का खेल रच बैठा ।

चिड़िया के घर में चेहक उठी

चिड़ियाघर में कोई आया है

स्वार्थ रूपी चूल्हे में प्रकृति को

झोंक कर अपना भोजन बनाया है।

खुली घर की खिड़कियां

थाली बजा कर दीए जलाए

अब बोलो मित्रों अच्छे

दिन आये या नहीं आए ।